गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण ६

एक बार दो मित्र सड़क पर जा रहे थे। वे एक समाचार-पत्र-विक्रेता की दुकान के आगे रुके ताकि उनमें से एक, समाचार-पत्र ख़रीद सके। उस आदमी ने विक्रेता को शालीनता से धन्यवाद दिया। विक्रेता, निर्विकार दृष्टि से, अभिस्वीकृति का एक भी शब्द बोले बिना उसे देखता रहा। दूसरे आदमी ने कहा, "कितने बुरे मूड में है यह आदमी!"

उसके मित्र ने कहा, "अरे, वह हर रात ऐसा ही रहता है।"

"तो तुम उसके साथ इतनी शिष्टता से क्यों व्यवहार करते हो? तुम समाचार-पत्र ख़रीदने के लिए बार-बार यहाँ क्यों आते हो?"

उस आदमी ने उत्तर दिया, "मैं कैसा व्यवहार करूँगा, इसका निर्णय मैं उसके हाथों में क्यों दूँ?"

जब तुम किसी दूसरे व्यक्ति को यह निर्धारित करने देते हो कि तुम कैसे कार्य करोगे तो निश्चितरूप से यह असम्मान को दर्शाता है—तुम्हारी योग्यताओं के प्रति नहीं क्योंकि तुम अब भी गा सकते हो, तुम अब भी नाच सकते हो, तुम अब भी अपना काम कर सकते हो। नहीं, यह तो इस बात का संकेत है कि तुममें अपने हृदय के प्रकाश के प्रति सम्मान नहीं है, उन भगवान में कोई श्रद्धा नहीं है जो तुम्हारे अन्तर में निवास करते हैं।

ऐसा कैसे होता है? कोई व्यक्ति अपने प्रति, भगवान के प्रति, सृष्टि के प्रति, प्रकृति के प्रति सम्मान कैसे खो देता है? बाइबिल में ऐसा लिखा है, "जो कोई भी कपट का अभ्यास करता है, वह मेरे निवास में नहीं रहेगा। जो कोई भी झूठ बोलता है वह मेरे सान्निध्य में नहीं रह रहेगा।"

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग* अध्याय ९ “सम्मान,” से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. १३०-१३१।